विचार बिन्दु

आपत्ति मनुष्य बनाती है और संपत्ति राक्षस। –विक्टर ह्यूगो

गरीबी से मुक्ति हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति व पर्यावरण से बेहतर कोई उपाय नहीं

यजुर्विद संहिता का एक महत्वपूर्ण सूत्र है: दारिद्र्य पाशाद्धुरुतो न दुःखम्, शिक्षारोग्येण विमुक्तिरिष्टा। शान्तिप्रकृत्यासहिता च सिद्धिः, नास्त्यत्रमार्गोऽपरतोहिश्रेष्ठः।। तात्पर्य यह है कि गरीबी के बंधन से बड़ा कोई दुःख नहीं है। शिक्षा और स्वास्थ्य से ही वांछित मुक्ति प्राप्त होती है। शांति और प्रकृति के साथ सिद्धि प्राप्त होती है। इससे बेहतर कोई और मार्ग नहीं है। इसी बात को यहाँ और भी स्पष्ट किया गया है: दारिद्र्यादधिकः निःसन्देहंनास्ति, तस्यविमुक्तये शिक्षारोग्य शान्तिपर्यावरणा निश्रेष्ठानिसाधनानि, अन्येषांन्यूनत्वात्। तात्पर्य यह है कि गरीबी से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है, और उससे मुक्ति दिलाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण से श्रेष्ठ कोई उपाय नहीं देखा जाता।आज की चर्चा पुनः इसी विषय पर है।

मेरा जीवन एक साधारण गाँव में शुरू हुआ जहाँ अकूत गरीबी थी। मेरे पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे और मैं प्रायः उनको इस संघर्ष में देखता था कि कैसे वे एक ओर अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते थे और दूसरी ओर सरकारी अफसरों और नेताओं से हाथ जोड़कर अपने पदस्थापन स्थान के विकास के लिए याचना करते थे। मैंने तब इस बात को स्वयं जिया कि कैसे गरीबी न केवल जीवन की गुणवत्ता को कम करती है, बल्कि यह व्यक्ति की आत्मा को भी छलनी कर देती है। इस अभिशाप से मुक्ति पाने की छटपटाहट में मैंने शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण के महत्व को आत्मसात और क्रियान्वित किया।

शिक्षा ने मेरे लिए विश्व के बंद दरवाजे खोले। शिक्षा मेरे लिए ज्ञान की वह रोशनी लेकर आई, जिसने मुझे अपनी स्थितियों को समझने और उन्हें बदलने की रणनीति और शक्ति दी। स्वास्थ्य ने मुझे यह सिखाया कि एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ और निर्मल मन निवास करता है, और यही निर्मल मन व्यक्ति के समग्र कल्याण का बीज है। शांति ने मुझे आंतरिक संतुलन और सामंजस्य के चमत्कारी प्रभाव को समझाया, जो हमारे भीतर सहयोग और सद्भावना को बढ़ाता है। हमारे आसपास का पर्यावरण और उसको बेहतर रखने के प्रति सचेत रहने से मुझे यह समझ पाना सुलभ हुआ कि प्राकृतिक संसाधन हमारे जीवन के मूल आधार हैं, और इनकी सुरक्षा करना हमारी असल में हमारी अपनी भलाई के लिए अनिवार्य है।

इस प्रकार, मेरी कहानी आपको यह सिखा सकती है कि गरीबी से लड़ने और विजय पाने हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण को साथ लेकर चलना होगा। ये चारों स्तंभ व्यक्तिगत जीवन के साथ ही समग्र समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। जब हम इन स्तंभों को सशक्त बनाते हैं, तो हम न केवल गरीबी के विरुद्ध एक प्रबल लड़ाई लड़ सकते हैं, बल्कि एक ऐसे समाज की नींव रख सकते हैं जो अधिक समृद्ध, स्वस्थ, और शांतिपूर्ण हो।

अपनी जीवन यात्रा में मैंने यह भी सीखा कि जब समाज एक साथ मिलकर काम करता है, तो बदलाव लाना तुलनात्मक रूप से शीघ्रतापूर्वक संभव हो पाता है। शिक्षा के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाना, स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाना, शांति की दिशा में काम करना, और पर्यावरण की रक्षा करना–ये सभी कार्य तब और अधिक प्रभावी होते हैं जब हम सभी इसमें साझा प्रयत्न करते हैं। मेरी कहानी यह भी दर्शाती है कि गरीबी एक बड़ी चुनौती है, लेकिन इसे पराजित करने के लिए हमारे पास शक्तिशाली रणनीतियाँ उपलब्ध हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति, और पर्यावरण के माध्यम से हम व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बना सकते हैं, और साथ ही पूरे समाज और राष्ट्र को भी उन्नति की ओर ले जा सकते हैं। इस दिशा में मिलजुलकर किया गया कार्य एक ऐसे भविष्य की ओर ले जा सकता है जहाँ गरीबी मात्र इतिहास का हिस्सा बन कर रह जाए।

शिक्षा और कौशल का महत्व तो जगजाहिर है। इससे न केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त होते हैं, बल्कि उसे आत्मनिर्भरता की एक महत्वपूर्ण शर्त है। एक अनपढ़ व्यक्ति जो अपने अधिकारों से अनभिज्ञ होता है, उसे प्रायः शोषण का सामना करना पड़ता है। जब वही व्यक्ति शिक्षित हो जाता है, तो वह न केवल अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है, बल्कि अपने जीवन की बेहतरी हेतु सही निर्णय ले सकता है। शिक्षा के साथ ही स्वास्थ्य भी गरीबी से मुक्ति का एक अनिवार्य साधन है। बीमारियों से मुक्त एक स्वस्थ व्यक्ति अपने कार्य में अधिक सक्षम होता है और तुलनात्मक रूप से अधिक आय अर्जित कर सकता है। इसके उलट, एक बीमार व्यक्ति अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर सकता, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति दुष्प्रभावित होती है। स्वास्थ्य सेवाओं का सुलभ होना और उनकी गुणवत्ता दोनों ही महत्वपूर्ण है। एक स्वस्थ समाज ही एक समृद्ध और सुखी समाज की नींव रख सकता है।

जब एक देश अपने बच्चों और नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा, और शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने में सफल होता है, तो यह न केवल व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है बल्कि समाज के समग्र विकास को भी सुनिश्चित करता है। ये सभी तत्व एक समृद्ध समाज की नींव हैं और हर व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ ही शांति भी गरीबी से मुक्ति का एक अनिवार्य घटक है। एक शांतिपूर्ण समाज में, व्यक्तियों, परिवारों और समाज को अपनी क्षमताओं को विकसित करने और आर्थिक अवसरों का लाभ उठाने के बेहतर अवसर प्राप्त होता है। जिस समाज में हिंसा और अशांति होती है उसमें सतत विकास की संभावनाएं घट जाती हैं और गरीबी बढ़ती जाती है। फलतः, शांति को बढ़ावा देना और आपसी संघर्षों को कम करना गरीबी से मुक्ति के लिए अनिवार्य है।

गरीबी को मिटाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, और शांति के साथ–साथ पर्यावरण का संरक्षण भी अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरणीय स्थिरता से हमारे संसाधन सुरक्षित रहते हैं, जो कि सतत आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिकीय विकास और लोगों के कल्याण में मौलिक भूमिका निभाते हैं। जब पर्यावरण संरक्षित होता है, तो यह खाद्य सुरक्षा में योगदान देता है, प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करता है, और स्वच्छ जल, वायु और मृदा प्रदान करता है। इस प्रकार, पर्यावरणीय स्थिरता प्राकृतिक पारिस्थितिकीय तंत्रों के साथ ही मानव समाज के स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता के लिए भी अनिवार्य है। इसलिए, गरीबी उन्मूलन की हमारी रणनीतियों में पर्यावरणीय संरक्षण को भी प्रमुख स्थान देना चाहिए। प्राकृतिक जलवायु समाधान जिसमें कार्बन पृथक्करण और संचय, जैव–विविधता का संरक्षण, और आजीविका में सुधार शामिल हैं, एक ऐसा रास्ता देते हैं जो गरीबी उन्मूलन के लिए आवश्यक संसाधनों का सुदृढीकरण भी करते हैं।

इन चारों स्तंभों – शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण – को सुदृढ़ करने से ही गरीबी के चक्र को तोड़ा जा सकता है और एक समृद्ध समाज की नींव रखी जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि सरकारें और समाज के सभी वर्ग इन क्षेत्रों में प्राथमिकता से निवेश करें। इन मूलभूत कारकों को सम्हाले बिना गरीबी के विरुद्ध एक प्रभावी और निर्णायक लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती।

यदि एक देश अपने बच्चों और नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा, और शांतिपूर्ण जीवन नहीं दे सकता, तो वास्तव में उसके पास देने के लिए और क्या बचता है? ये सभी तत्व न केवल एक समृद्ध समाज की नींव हैं, बल्कि ये हर व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण हैं। एक व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के रूप में हमारी प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि हम इन मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करें और अपने नागरिकों को एक सुरक्षित, स्वस्थ, और शिक्षित भविष्य प्रदान करें। यदि हमारा देश अपने नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा और शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने में सफल होता है, तो यह व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को तो बढ़ाएगा ही साथ ही समाज के समग्र विकास को भी सुनिश्चित करेगा। इन मूलभूत कारकों को ध्यान रखकर तय की गई प्राथमिकता ही वह आधार है जिस पर एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होता है।

इस विश्लेषण में हम आने वाले समय में यह स्पष्ट करेंगे कि कैसे शिक्षा नागरिकों को नई तकनीकें और विचार सीखने में मदद कर सकती है, स्वास्थ्य सेवाएं कैसे उन्हें अधिक उत्पादक बना सकती हैं, पर्यावरणीय संरक्षण कैसे संसाधनों की रक्षा कर सकता है, और शांति कैसे हमारे समाज को अधिक सहयोगी और सद्भावपूर्ण बना सकती है। हम उम्मीद करते हैं कि इस विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष समाज और सरकारों को इन क्षेत्रों में नीतियाँ और कार्यक्रम विकसित करने के लिए प्रेरित करेंगे, जिससे गरीबी कम होने के साथ ही देश की समग्र प्रगति भी सुनिश्चित होगी।

हम इस श्रृंखलाबद्ध विश्लेषण को इस आशा और विश्वास के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं कि यह ज्ञान, गरीबी को मिटाने के लिए समाज और सरकारों को एक नई दिशा देगा। जब एक देश अपने बच्चों और नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा, और शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने में सफल होता है, तो यह न केवल व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है बल्कि समाज के समग्र विकास को भी सुनिश्चित करता है। ये सभी तत्व एक समृद्ध समाज की नींव हैं और हर व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं। इससे न केवल हमारे देश की समग्र उन्नति सुनिश्चित होगी, बल्कि यह हमारे नागरिकों को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी और सक्षम बनाने में भी मदद करेगा। यह आवश्यक है कि हम शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, और शांति के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा दें और इन्हें अपनी राष्ट्रीय नीतियों का केंद्र बिंदु बनाएं। इस प्रकार, हम एक ऐसे भविष्य की ओर अग्रसर होंगे जहाँ हर नागरिक के पास अपनी पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने का अवसर होगा।

हम इस बात को समझते हैं कि गरीबी एक जटिल समस्या है जिसका समाधान एक क्षेत्र में कार्य करने से नहीं, अपितु एक समन्वित और समग्र दृष्टिकोण से ही हो सकता है। इसलिए हमारी श्रृंखला विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के विचारों और अनुभवों को साझा करेगी, और शोध–आधारित विचारों को आगे लायेगी, जिससे नवाचार और सुधार के लिए प्रेरणा मिल सके। अंत में, हम आशा करते हैं कि यह श्रृंखला न केवल जागरूकता बढ़ाएगी बल्कि समाज और सरकारों को उन नीतियों और कार्यक्रमों को अपनाने के लिए प्रेरित करेगी जो वास्तव में गरीबी को कम करने और हमारे देश को एक समृद्ध भविष्य की ओर ले जाने में सहायक होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

युवा जोश के संवाहक, पथ प्रदर्शक स्वामी विवेकानंद

भजन लाल शर्मा

आज का दिन स्वामी विवेकानंद जी की जयंती का पर्व है। हम सभी इसे युवा दिवस के रूप में मनाते हैं। युवा वर्ग ही किसी राष्ट्र के विकास का कर्णधार होता है, इसलिए आज का दिवस पावन–प्रेरणास्पद है। स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं को उज्ज्वल राहों पर चलने के लिए ही सदा प्रेरित किया है। स्वामी विवेकानंद युवाओं के विरल मार्गदर्शक थे। युवाओं में जोश जगाने वाले थे। योग, राजयोग, ज्ञानयोग जैसे ग्रंथों का सृजन कर उन्होंने युवाओं का पथ प्रशस्त किया। वेदांत, योग दर्शन का युवाओं में प्रसार कर उन्होंने लोक का आलोक दिया। युवाओं के उत्कर्ष में राष्ट्र का सर्वोत्कृष्ट देखने वाले स्वामी विवेकानंद ही वह महामना थे जिन्होंने कहा था कि किसी राष्ट्र को राजनीतिक विचारों से प्रेरित करने के पहले जरूरी है कि उसमें आध्यात्मिक विचारों का प्रवाह किया जाए।

स्वामी विवेकानंद जी की राजस्थान से निकटता थी। बचपन का उनका नाम नरेंद्रनाथ दत्त था, पर वह विवेकानंद से ही विश्वभर में जाने गए। यह नाम उन्हें राजस्थान से मिला। खेतड़ी के तत्कालीन महाराजा अजित सिंह ने युवक नरेंद्रनाथ में हीरे की परख की और विश्वधर्म संसद में बोलने के लिए जाने हेतु उन्हें खेतड़ी नरेश ने प्रेरित किया। उन्होंने ही नरेंद्रनाथ दत्त और विविदिशानंद को "विवेकानंद" से अभिहित किया। विश्व धर्म संसद में बोलने के लिए जाने से पहले खेतड़ी नरेश ने ही उन्हें राजस्थानी भगवा साफा, चोगा, कमरबंध भेंट की थी।

स्वामी विवेकानंद धर्म, दर्शन, कला, साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान थे। यही नहीं शास्त्रीय संगीत का भी उन्हें गहरा ज्ञान था। जीवन का को क्षेत्र ऐसा नहीं था, जिनका मर्म स्वामी विवेकानंद से अछूता था। युवाओं से उनका जुड़ाव था। उन्होंने भारतभर की यात्राएं कर पथ का दिव्य पाथेय पाया। युवा–जोश को जगाया। ये कहा भी गया है "उद्यमेन ही सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः" अर्थात उद्यम करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं न कि केवल मनोरथ करने से।

विश्व धर्म सभा को संबोधित करने संबंधित उनका जीवन का पक्ष भी प्रेरणा देने वाला है। शिकागो पहुंचने पर जितने भी पैसे उनके पास थे वह सब खत्म हो गए थे। कड़ाके की ठंड, गर्म कपड़ों का अभाव और जिस धर्म महासभा ने उन्हें जन–जन तक पहुंचाया, वहां पर प्रवेश के लिए भी उनके पास यथोचित परिचय पत्र नहीं था। सब ओर कठिना यां। को दूसरा होता तो घबरा जाता। लौट आता। स्वामीजी ने धैर्य नहीं खोया। हालात से जूझते हुए उन्होंने धर्म सभा में प्रवेश पाया और अपने संबोधन से विश्व भर में भारत को गौरवान्वित किया। उन्होंने धर्म संसद में भी कहा कि को भी धर्म बंधन नहीं मुक्ति का मार्ग है। जिसने जैसा मार्ग बनाया, उसे वैसी ही मंजिल मिलती है। धर्म संसद में उनका यह कहा आज भी प्रेरणादायक है कि मैं उस धर्म से हूं जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। हम सिर्फ़ सार्वभौमिक सहिष्णुता पर ही विश्वास नहीं करते बल्कि, हम सभी धर्मों को सच के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूं जिसने सभी धर्मों और सभी देशों के सताए गए लोगों को अपने यहां शरण दी। मुझे गर्व है कि हमने अपने दिल में इजराइल की वो पवित्र यादें संजो रखी हैं जिनमें उनके धर्मस्थलों को रोमन हमलावरों ने तहस–नहस कर दिया था और फिर उन्होंने दक्षिण भारत में शरण ली।"

हमारे व्यक्तित्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षण एवं निर्धारक चरित्र है। स्वामीजी ने युवाओं को चरित्र निर्माण की ओर प्रेरित किया। वह कहते हैं प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही दैवीय गुणों से परिपूर्ण होता है। ये गुण सत्य, निष्ठा, समर्पण, साहस एवं विश्वास से जागृत होते हैं इनके आचरण से व्यक्ति महान एवं चरित्रवान बन सकता है। चरित्र निर्माण के लिए व्यक्ति में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान, आत्मसंयम एवं आत्मत्याग जैसे गुण हों, इनका पालन करने से व्यक्ति अपने व्यक्तित्व और देश–समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है। हम जानते हैं कि त्रेता युग में रावण के पास श्रीराम की तुलना में ज्ञान, शक्ति, सैन्य शक्ति, धन,संपदा, राज वैभव सब कुछ अधिक था लेकिन श्रीराम के पास सर्वोत्तम चरित्र था, उसी के बल पर रावण का अंत किया। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने "रामचरितमानस" लिखा।

युवाओं के लिए स्वामी विवेकानंद जी का यह कहना भी कम प्रेरणाप्रद नहीं है कि शक्ति ही जीवन है और कमजोरी मृत्यु है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने कभी ऐसे ही नहीं कहा था कि यदि भारत को को जानना चाहता है तो उसे सबसे पहले विवेकानंद को पढ़ना होगा। उनके दिए संदेशों को आत्मसात करना होगा। उनमें सब कुछ सकारात्मक ही सकारात्मक था। नकारात्मक कुछ भी नहीं था।

राजस्थान के युवा भी राजस्थान की जुझारू, कर्मठ, समर्पित, मेहनती, उत्साही और ऊर्जावान युवाशक्ति है और ये आगे बढें स्वयं भी सशक्त बनें तथा राजस्थान को और देश को अग्रणी एवं विकसित बनाने में सहभागी बने। राजस्थान सरकार युवाओं को आगे बढाने में पूरी तरह प्रतिबद्ध है। राजकीय सेवाओं की तैयारी कर रहे युवकों के लिए सरकार ने 5 साल में चार लाख भर्तियों का संकल्प लिया है। साल 2025 के लिए 81,000 से अधिक पदों के लिए भर्ती परीक्षाओं का कैलेंडर राजस्थान में पहली बार जारी किया गया है। राज्य सरकार द्वारा मुफ़्त कोचिंग हेतु मुख्यमंत्री अनुप्रति योजना, किराया सहायता योजना, राजस्थान वन नेशन वन स्टूडेंट आइडी, युवा नीति–2024, अटल उद्यमी योजना, मुख्यमंत्री युवा संबल योजना, युवा प्रशिक्षु कार्यक्रम आदि संचालित हैं और इनसे लाभ उठाकर युवा रोज़गार स्वरोजगार एवं उद्यम के क्षेत्र में करियर निर्माण कर न केवल अपना बल्कि अपने परिवार समाज राज्य व देश का विकास कर सकता है। आपका बढ़ता हुआ सामर्थ्य ही विकसित राजस्थान और विकसित भारत का आधार होगा।

अंततः संकल्प शक्ति ही हमें लक्ष्य की ओर पहुँचने के लिए प्रेरित करती है, साहस जागृत करती है, जुझारू बनाती है और समर्पित करती है। स्वामी जी कहते थे "एक विचार लो उसे अपना ध्येय बनाकर उसके साथ लीन हो जाओ"। उपनिषदों का उनका भाष्य भी लुभाता है। उनका बहुश्रुत वाक्य है, 'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।' यह कठोपनिषद के मंत्र "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।' से लिया हुआ है। युवाओं को प्रेरित करने के लिए स्वामी विवेकानंद ने इस मंत्र का उपयोग निरंतर किया। वह हमेशा यह कहते थे कि कार्य करने के लिए बुद्धि, विचार और हृदय की आवश्यकता है। प्रेम से असंभव भी संभव हो जाता है। उन्होंने बार–बार यह कहा कि युवा भूत–भविष्य के सेतु होते हैं। युवाओं को उनका संदेश था, जीर्ण–शीर्ण होकर थोड़ा–थोड़ा करके मरने की बजाय वीर की तरह जीएं। भारतीयता से ओतप्रोत शिकागो में स्वामी विवेकानंद जी का प्रबोधन इसी भाव धारा का प्रवाहन था। उनका कहना था कि अतीत से ही भविष्य बनता है। अतः यथासंभव अतीत की ओर देखो और उसके बाद सामने देखो और भारत को उज्ज्वल राहों तक पहुंचाने के लिए कार्य करें। स्वामी विवेकानंद जी की जयंती को युवा दिवस के रूप में मनाने का अर्थ है, स्वामी जी के आदर्शों से युवाओं को सिंचित करना। उन्हें नैतिक तथा बौद्धिक रूप में सक्षम बनाते हुए राष्ट्र विकास के लिए संकल्पित करना। वह भारत के गौरवशाली अतीत से प्रेरणा ले विकसित भारत के लिए युवाओं को तैयार करने के संवाहक थे। आ ए, स्वामी विवेकानंद जयंती पर हम उनके आदर्शों से प्रेरणा ले आगे बढ़ें।

भजन लाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान

पांच दिवसीय भीलवाड़ा नाट्य महोत्सव का आग़ाज़

भीलवाड़ा, (निसं)। रसधारा सांस्कृतिक संस्थान, भीलवाड़ा द्वारा विख्यात नाट्ययधर्मी डॉ. अर्जुनदेव चारण के सम्मान में पांच दिवसीय भीलवाड़ा नाट्यय महोत्सव का आगाज हुआ।

नगर निगम के टाउन हॉल में मुख्य अतिथि महापौर नगर निगम राकेश पाठक, डॉ. अर्जुनदेव चारण, ईश्वरदत्त माथुर, लक्ष्मी नारायण डाड ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। गोपाल आचार्य निर्देशित नाटक भोपा भैरुनाथ का सफल मंचन हुआ। भीलवाड़ा नाट्यय महोत्सव–2025 के दूसरे दिन तीन नाटकों का मंचन हुआ। रसधारा के साक्षात ऑडिटोरियम में रंगशीर्ष संस्था, जयपुर द्वारा दिनेश प्रधान निर्देशित नाटक टाइपिस्ट का मंचन हुआ। वहीं शाम को चार बजे रम्मत थिएटर ग्रुप जोधपुर द्वारा आशीषदेव चारण निर्देशित नाटक गवाड़ी का प्रदर्शन हुआ। गवाड़ी नाटक में यह दिखाया गया कि कैसे हम व्यक्ति से व्यक्तिगत की तरफ बढ़ते जा रहे हैं और अंत में सिर्फ एक व्यक्ति नितांत अकेला रह जाता है। वहीं शाम को सात बजे टाउन हॉल में कल्पना संगीत एवं थिएटर संस्थान, बीकानेर द्वारा विपिन पुरोहित निर्देशित नाटक खूबसूरत बहू का मंचन हुआ। खूबसूरत बहू नाटक में ग्रामीण परिवेश के आधार पर ग्रामीण संस्कृति पर हावी हो रहे शहरी फूहड़पन व नकलीपन एवं रूढ़िवादी कुरीतियों का चित्रण किया है। इसी के साथ रंगधर्मी मंजू जोशी की स्मृति में रसधारा द्वारा प्रतिवर्ष महिला रंगनेत्री को दिया जाने वाला पुरस्कार मंजू जोशी नाट्यय सम्मान वर्ष 2023 के लिए अभिनय गुरुकुल, जोधपुर की रंगनेत्री, अभिनय प्रशिक्षिका, नाट्यय निर्देशिका, राष्ट्रीय नाट्यय विद्यालय स्नातक स्वाति व्यास को मोमेंटो व सम्मान राशि के साथ प्रदान किया गया।

भीलवाड़ा नाट्यय महोत्सव के दौरान नाटकों का मंचन हुआ।

श्रीगंगानगर के व्यापारी इस बार किन्नू बांग्लादेश नहीं भेज रहे

श्रीगंगानगर क्षेत्र से हर साल उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत किन्नू बांग्लादेश भेजा जाता है

श्रीगंगानगर, (निसं)। पड़ोसी देश बांग्लादेश में सरकार बदलने के बाद दोनों देशों के बीच संबंधों में आई खटास का असर अब कारोबार पर भी पड़ना शुरू हो गया है। श्रीगंगानगर क्षेत्र से हर साल उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत किन्नू बांग्लादेश भेजा जाता है, लेकिन इस बार किन्नू के कारोबार पर भी इसका असर पड़ रहा है। श्रीगंगानगर के व्यापारी किन्नू इस बार बांग्लादेश नहीं भेज रहे हैं।

श्रीगंगानगरी किन्नू की मिठास व अच्छी क्वालिटी के कारण देश से नहीं पड़ोसी देशों में भी खूब डिमांड रहती है। अरब देशों के साथ ही पड़ोसी देश बांग्लादेश में भी श्रीगंगानगरी किन्नू की खूब डिमांड रहती है, लेकिन बांग्लादेश में सरकार बदलने के साथ ही दोनों देशों के बीच संबंधों में खटास आई है। ऐसे में कारोबार पर भी इसका सीधा असर पड़ रहा है। किन्नू के सीजन नवंबर, दिसंबर व जनवरी माह में हर साल उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत माल सड़क मार्ग से बांग्लादेश भेजा जाता है, लेकिन इस बार व्यापारी भी किन्नू बांग्लादेश नहीं भेज रहे हैं।

■ भारत-बांग्लादेश के संबंधों में खटास का असर किन्नू कारोबार पर पड़ा

हालांकि देश के अन्य राज्यों में किन्नू की डिमांड अच्छी है और यहां से व्यापारी अन्य राज्यों में किन्नू यहां के वैक्सीनेशन व ग्रेडिंग करवाने के बाद पैंकिंग कर ट्रकों से भेज रहे हैं। बांग्लादेश सरकार ने गत वर्ष भारत से भेजे जाने वाले किन्नू पर आयात शुल्क 28 प्रतिशत से बढ़ाकर 62 प्रतिशत कर दिया। इस कारण यहां से भेजे जाने वाले किन्नू के भाव वहां बढ़ गए हैं। इस कारण डिमांड भी कम हो गई। बांग्लादेश में पाकिस्तान से भी किन्नू भेजा जाता है।

जिले में इस बार 12500 हैक्टेयर में किन्नू के बाग हैं। इस बार लगभग 2.75 लाख एमटी किन्नू का उत्पादन हुआ है। गर्मी का दौर लंबा चलने से दिसंबर के अंतिम सप्ताह में ठंड पड़नी शुरू हुई है। इससे किन्नू की क्वालिटी में सुधार के साथ ही मिठास भी बढ़ी है। ऐसे में किन्नू का सीजन भी इस बार लंबा चलेगा। उम्मीद है कि इस बार मार्च तक आमजन को खाने के लिए किन्नू मिल सकेगा।

राजकुमार जैन, अध्यक्ष किन्नू क्लब, श्रीगंगानगर का कहना है कि किन्नू के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार को प्रयास करने चाहिए। पांच साल पहले तक किन्नू महोत्सव का आयोजन भी किया जाता था, लेकिन अब ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं होता। किन्नू के उत्पाद तैयार करने पर शोध की भी जरूरत है, जिससे कि जैम जैली से उत्पाद तैयार हो सके।

राशिफल रविवार 12 जनवरी, 2025

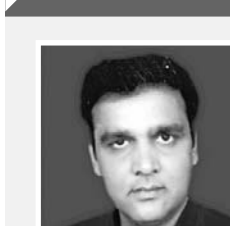

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, मृगशिरा नक्षत्र दिन 11:25 तक, ब्रह्म योग प्रातः 9:09 तक, गर करण सायं 5:48 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–कर्क, बुध–धनु, गुरू–वृष, शुक्र–कुम्भ, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

रवियोग दिन 11:25 से आरम्भ होगा। आज स्वामी विवेकानन्द जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:40 से 9:58 तक, लाभ–अमृत 9:58 से 12:35 तक, शुभ 1:53 से 3:12 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:48

मेष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये–पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

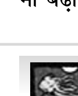

सिंह

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से संबंध बनेंगे।

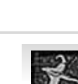

धनु

परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा।

वृष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

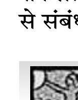

कन्या

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

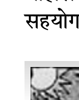

मकर

स्वास्थ्य संबंधित परेशानी से राहत मिलेगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलगी। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

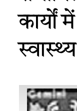

मिथुन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

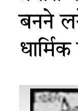

तुला

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

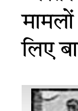

कुंभ

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

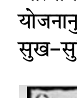

कर्क

मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

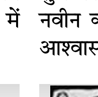

वृश्चिक

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

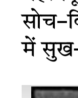

मीन

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।